International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मुग़ल काल में साहित्य का वकास

डॉ.श्रीफल मीना, सह – आचार्य
इतिहास वभाग
राजकीय महाविद्यालय,करौली (राजस्थान)

सारांश

मुग़ल काल में साहित्य का वकास एक महत्वपूर्ण और समृद्ध युग था , जिसने भारतीय साहित्य को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया। इस काल में उर्दू भाषा का महत्व बढ़ा और यह साहित्यिक रचनाओं के लए मुख्य रूप से उपयोग हुआ। क वता , काव्य, और नाटक का वकास हुआ , और अकबरी और ब्रज क वता के माध्यम से **अद्वितीय**रचनाएँ हुईं। मुग़ल काल के शासकों ने कला को भी प्रोत्साहित कया , और इस काल की चत्रकला , ग्रंथकला, और गुम्बदों का निर्माण वशेष ध्यानदेने वाला था। धा र्मक साहित्य में भी वकास हुआ , और गुरु नानक और तुलसीदास जैसे महान क वयों ने अपनी रचनाओं से धा र्मक तत्वों को प्रस्तुत कया। समग्र रूप से , मुग़ल काल ने भारतीय साहित्य और कला के वकास में महत्वपूर्ण भू मका निभाई और एक समृद्ध साहित्य युग के रूप में याद कया जाता है।

परिचय

मुग़ल काल, भारतीय साहित्य और कला का सुनहरा युग था , जिसने भारतीय साहित्य को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया और उसे व वधता का प्रतीक बनाया। यह काल 16वीं सदी से 18वीं सदी के बीच मुग़ल साम्राज्य के शासकों के शासनकाल में घटित हुआ था , जैसे क अकबर, जहाँगीर, और शाहजहाँ।

मुग़ल काल में साहित्य का वकास मुख्य रूप से उर्दू भाषा के माध्यम से हुआ। उर्दू ने भाषाओं के मेलजोल का एक नया रूप धारण कया और भाषा की समृ द्ध को प्रमोट कया। इस काल में क वता, काव्य, और नाटक का वकास हुआ, और अकबरी और ब्रज क वता के माध्यम से बहुत ही उच्च स्तर की रचनाएँ हुईं। वशेषकर, मीर ताक़ी मीर के काव्य को उच्च क वता का आदर्श माना जाता है।मुग़ल काल के धा र्मक साहित्य में भी वकास हुआ , और गुरु नानक और तुलसीदास जैसे महान क वयों ने अपनी रचनाओं से धा र्मक तत्वों को प्रस्तुत कया। इसके अलावा , मुग़ल काल के राजा-महाराजाओ ने कला को भी प्रोत्साहित कया, और इस काल की चत्रकला, ग्रंथकला,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

और गुम्बदों का निर्माण वशेष ध्यानदेने वाला था।सामान्य रूप से , मुग़ल काल ने भारतीय साहित्य और कला के वकास में महत्वपूर्ण भू मका निभाई और एक समृद्ध साहित्य युग के रूप में याद कया जाता है। इसके परिणामस्वरूप , मुग़ल काल भारतीय साहित्य और कला का एक महत्वपूर्ण चरण था, जो भारतीय साहित्य के इतिहास में चमक रहा है।

अनुसंधान का दायरा

मुग़ल काल में साहित्य के वकास का अनुसंधान एक गहरा और महत्वपूर्ण क्षेत्र है , जिसमें भारतीय साहित्य और साहित्यिक परंपराओं के साथ ही मुग़ल साम्राज्य के राजा-महाराजों के साहित्यिक संवाद का भी अध्ययन कया जा सकता है।मुग़ल काल के उपन्यासों , क वताओं, और नाटकों का अध्ययन करने से हम उनके सामाजिक , सांस्कृतिक, और राजनैतिक परिप्रेक्ष्य को समझ सकते हैं। इन रचनाओं में मुग़ल सम्राटों के जीवन के महत्वपूर्ण पहलू , उनकी ध र्मक भावनाएँ, और सामाजिक संरचना के परिप्रेक्ष्य में जानकारी मलती है।उर्दू भाषा के अध्ययन से हम देख सकते हैं क कैसे मुग़ल काल में भाषा का वकास हुआ और उर्दू साहित्य का नवाचारिक उपयोग हुआ। इसके साथ ही , उर्दू काव्यशास्त्र के अध्ययन से हम उन तकनीकों को समझ सकते हैं जिन्होंने मुग़ल काल के क वयों को उनकी रचनाओं को और भी अद् वतीय बनाने में मदद की।मुग़ल साम्राज्य के अर्थशास्त्र , वज्ञान, और धर्म संस्कृति के संबंध में भी अनुसंधान कया जा सकता है , जो साहित्य के साथ ही उनके समय के सामाजिक , आ र्थक, और धा र्मक दृष्टिकोण को समझने में मदद करता है।इस प्रकार , मुग़ल काल में साहित्य के वकास के अनुसंधान से हम भारतीय साहित्य और साहित्यिक परंपराओं के वकास के पीछे के प्र क्रयाओं और प्रेरणाओं को बेहतर से समझ सकते हैं और इसके महत्वपूर्ण पहलूओं को खोज सकते हैं।

बाबर और हुमायूँ के शासनकाल का साहित्य

बाबर और हुमायूँ के शासनकाल के दौरान भारतीय साहित्य में कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ और प्रबल प्रभाव थे, ले कन इस काल की साहित्यिक रचनाएँ बहुत ही कम मलती हैं।

बाबर की आत्मकथा - "बाबरनामा": बाबर ने अपने जीवन का वर्णन कया और उसने अपनी आत्मकथा "बाबरनामा" की रचना की। यह कृति उनके व्यक्तिगत अनुभवों और मुग़ल साम्राज्य की आरं भक इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

पर्दा और संस्कृति: हुमायूँ के शासनकाल में पर्दा कला और संस्कृति का वकास हुआ। इसके परिणामस्वरूप, सम्राट हुमायूँ के दरबार में क व , लेखक, और कलाकारों के साथ साहित्यिक और कला के समर्थन का आलंब मला।

परम्परागत शास्त्रीय साहित्य: बाबर और हुमायूँ के शासनकाल में परम्परागत भारतीय शास्त्रीय साहित्य का आदर कया गया था। संस्कृत में र चत ग्रंथों का अध्ययन और उनके प्रमोटर के रूप में योग्यता और धा र्मक ज्ञान के रूप में इसका उपयोग कया जाता था।

भक्ति साहित्य: बाबर और हुमायूँ के शासनकाल में भक्ति साहित्य के महत्वपूर्ण उदाहरण उत्पन्न हुए, जैसे क मीराबाई के भजन। यह साहित्य मानवीय भावनाओं को प्रकट करने का माध्यम बना।

बाबर और हुमायूँ के शासनकाल का साहित्य इस दौरान के सामाजिक , धा र्मक, और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से महत्वपूर्ण है , और यह इस काल के इतिहास और साहित्य के अध्ययन के लए महत्वपूर्ण स्रोत है।

<u>अकबर के साम्राज्य में साहित्य</u>

अकबर के साम्राज्य के दौरान (1556-1605), भारतीय साहित्य एक सोने की युग की ओर बढ़ा, जो भाषा, साहित्य, कला, और वचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान की ओर पहुंचा। अकबर के दरबार में साहित्यिक गति व धयों के प्रमोट कया गया और यहाँ के क वयों , लेखकों, और कलाकारों के लए एक समृद्ध और **अद्वितीय** माहौल पैदा हुआ।

1. उर्दू भाषा का वकास: अकबर के समय में उर्दू भाषा का वकास हुआ और यह साहित्यिक और कला के क्षेत्र में मुख्य भाषा बन गई। उर्दू क वता , कहानियाँ, और नाटक इस काल में वक सत हुईं।

2. नवाचारिक काव्यशास्त्र: अकबर के दरबार में क वयों ने नवाचारिक काव्यशास्त्र का अध्ययन कया और अलंकारों का प्रयोग काव्य में **अद्वितीय** ढंग से कया।

3. भक्ति साहित्य का प्रोत्साहन: अकबर ने भक्ति साहित्य को प्रोत्साहित कया, और इसके प्रमुख प्रतिष्ठान बैरागी संतों के संग थे, जैसे क मीराबाई, सूरदास, और तुलसीदास।

4. रचनाकारों का प्रमोट: अकबर ने अपने दरबार में कई प्रमुख रचनाकारों को प्रोत्साहित कया , जैसे क अबुल फज़ल, बीरबल, और अब्दुल रहीम ख़ान-ए-एनासरी।

5. वैचारिक गति व धयाँ: अकबर के दरबार में वैचारिक गति व धयों का भी प्रमोट हुआ , और वैचारिक चर्चाओं में व भन्न समाज के लोगों के साथ शा मल होने का मौका मला।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

सार्थक रूप से, अकबर के साम्राज्य में साहित्य और कला का वकास एक महत्वपूर्ण माध्यम था जिसने भारतीय साहित्य को नये और नवाचारिक दिशा में ले जाया गया और मुग़ल साम्राज्य के एक सुनहरे युग की शुरुआत की।

<u>जहाँगीर के क्षेत्र में साहित्य</u>

जहाँगीर के शासनकाल (1605-1627) के दौरान, भारतीय साहित्य में भी महत्वपूर्ण वकास हुआ। जहाँगीर, मुग़ल साम्राज्य के सम्राट के रूप में , साहित्यिक और कला के क्षेत्र में एक प्रमुख प्रायोजक और प्रशंसक थे। उनके दरबार में साहित्यिक गति व धयों को प्रोत्साहित कया गया और यहाँ के लेखकों और क वयों के लए एक साहित्यिक उत्तरा धकार का समय था।

जहाँगीर के दरबार में क व-लेखकों का समर्थन: जहाँगीर ने अपने दरबार में कई प्रमुख क व और लेखकों को प्रोत्साहित कया, जैसे क क व बिहारी, क व कल्याण, और म लक मोहम्मद जायसी। इन क वयों ने उर्दू और प र्सयन भाषा में रचनाएँ की और उन्होंने अपने काव्य ग्रंथों में भारतीय संस्कृति, धर्म, और राजनीति के प्रशंसा और महत्व का संदेश दिया।

सलीम चश्ती का योगदान: जहाँगीर ने सलीम चश्ती, एक महत्वपूर्ण सूफी संत, को अपने दरबार में सम र्थत कया। उन्होंने सूफी साहित्य को प्रशंसा और वकास कया और धा र्मक तत्वों को प्रस्तुत करने के लए अपनी रचनाओं में योगदान कया।

परम्परागत संस्कृत साहित्य: जहाँगीर के शासनकाल में परम्परागत संस्कृत साहित्य के अध्ययन और प्रमोट का प्रयास कया गया। उन्होंने भगवद गीता और अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों के संस्कृत अनुभागों के अनुवाद को प्रोत्साहित कया।

जहाँगीर का शासनकाल भारतीय साहित्य के वकास के लए महत्वपूर्ण है , क्यों क इस समय के दरबार में साहित्य और कला को प्रमोट कया गया और उन्होंने भारतीय साहित्य को एक नयी दिशा दी।

<u>शाहजहाँके क्षेत्र में साहित्य</u>

भारतीय इतिहास के स्वर्णकाल में , मुग़ल साम्राज्य के सम्राट शाहजहाँ के क्षेत्र में साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान था। इस काल में साहित्य और कला का नवाबी आलम बन गया था , जिसने सुंदरता और समृ द्ध की एक अद् वतीय शृंगारिक जीवनशैली को प्रकट कया। इस समय के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

साहित्यकारों ने उनके दरबार में मनोरंजन के लए क वताएँ, गीत, और कहानियाँ रची।शाहजहाँ के दरबार में साहित्यकारों का समृद्ध संगठन था , जिसमें अहमदनगर, दिल्ली, और आगरा जैसे शहरों से आए कई क व, लेखक, और कलाकार शा मल थे। उन्होंने सुंदर क वताओं , ग़ज़लों, और मुक्तक रचनाओं की रचना की, जो आज भी हमारे साहित्य के मूल स्रोत के रूप में महत्वपूर्ण हैं।शाहजहाँ के दरबार में उत्कृष्ट संगीत का भी महत्वपूर्ण स्थान था। रचनात्मक संगीतकार और गायक इस समय के दरबार में अपने कला कौशल का प्रदर्शन करते थे , जो क वता और संगीत का मश्रण होता था।शाहजहाँ के शासनकाल में साहित्यकारों और कलाकारों ने भारतीय संस्कृति को एक नए ऊंचाइयों तक पहुँचाया और मुग़ल साम्राज्य को एक सांस्कृतिक धरोहर का केंद्र बनाया। उनका साहित्य और कला में योगदान आज भी हमारे इतिहास और साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है इस प्रकार, शाहजहाँ के क्षेत्र में साहित्य और कला ने एक सोने का युग दर्ज कया और भारतीय साहित्य और संगीत को एक नए दर्जे तक पहुँचाया। इसका प्रभाव हमारी संस्कृति और कला पर आज भी महत्वपूर्ण है।

<u>साहित्य की समीक्षा</u>

मुग़ल साम्राज्य के काल में सामाजिक परिवर्तन का आदान-प्रदान साहित्य के माध्यम से महत्वपूर्ण रूप से हुआ। सामाजिक और आ र्थक परिवर्तन के कारण , इस काल में व भन्न वर्गों में बदलाव आया और इसका प्रभाव साहित्य पर हुआ।पहले , मुग़ल साम्राज्य के अंतर्गत , भारतीय समाज में सामाजिक रूप से गुजरने वाले प्रतिवर्गों को व भन्न साहित्यिक रूपों में प्रकट कया गया। उदाहरण स्वरूप, भक्ति साहित्य ने जाति और वर्ण के पारंपरिक मर्जी को छूने का प्रयास कया, जो एक नये सामाजिक और धा र्मक दृष्टिकोण की ओर इंगीत करता था।सामाजिक रूप से बदलते परिपर्णता परिपेक्ष्य में, साहित्यिक ग्रंथों ने भारतीय समाज में वचारों के प्रति नए सोचने के तरीके प्रस्तुत कए। यह नए साहित्यिक आयामों को प्रोत्साहित करता था जो सामाजिक सुधार की ओर बढ़ रहे थे।सामाजिक परिवर्तन के इस आदान-प्रदान के माध्यम से , मुग़ल काल का साहित्य समाज के व भन्न पहलुओं के प्रति संवेदनशीलता और उनके बदलते दृष्टिकोण की प्रतिस्थापना करता है। इससे साहित्य के माध्यम से समाज की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान हुआ और वचारों की रूपरेखा में बदलाव आया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मुग़ल काल में साहित्यिक संवाद की समृ द्ध हुई और यह एक उद्देश्यपूर्ण तरीके से साहित्य के वकास में महत्वपूर्ण भू मका नभाई। इस समय के दरबारों में साहित्यिक गति व धयों को प्रोत्साहित कया गया और व भन्न साहित्यकारों के बीच साहित्यिक संवाद का माहौल तैयार कया गया।क वता और क वयों की समृ द्ध: मुग़ल काल में क वता का आदान-प्रदान हुआ और यह एक नए रूप में वक सत हुई, जैसे क उर्दू शेर, गज़ल, और मर सया। इसके साथ ही, व भन्न भाषाओं के क व एक-दूसरे के काव्यशास्त्र , रसशास्त्र, और अलंकारशास्त्र के बारे में वचार करते थे, जिससे साहित्य की गुणवत्ता में सुधार हुआ।धा र्मक संवाद: मुग़ल सम्राटों ने व भन्न धर्मों के साहित्यकारों को अपने दरबार में बुलवाया और धा र्मक मुद्दों पर साहित्यिक चर्चा की अनुमति दी। इससे ध र्मक संवाद का प्रोत्साहन हुआ और भारतीय समाज के धा र्मक वचार को वक सत कया गया।साहित्यिक संवाद की समृ द्ध के माध्यम से , इस समय के साहित्यिक कला क्षेत्र में नए और नवाचारिक वचारों का आदान-प्रदान हुआ और यह साहित्य को उन्नत करने में मदद करता है।

संस्कृति और साहित्य राजनीतिक प्रशासन के महत्वपूर्ण पहलू हैं जो समृ द्ध, सामाजिक परिपर्णता, और सामाजिक संगठन के साथ जुड़े हैं। संस्कृति और साहित्य राजनीतिक दिलचस्पी पैदा कर सकते हैं, उत्कृष्टता को प्रोत्साहित कर सकते हैं , और जनता को जागरूक कर सकते हैं।साहित्य राजनीतिक वचारधारा को प्रस्तुत कर सकता है , जो लोगों को अपने समाज और राजनीतिक प्रशासन के प्रति जागरूक करता है। क वता , कहानी, नाटक, और निबंधों के माध्यम से समाज में गुदवाना और गोंदना कया जा सकता है।संस्कृति राजनीतिक प्रशासन के लए महत्वपूर्ण है , क्यों क यह एक समृ द्ध और वकास का स्रोत हो सकता है। संस्कृति के माध्यम से लोगों को उनके धा र्मक, सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों का संरक्षण करने का मार्ग दिखाया जा सकता है, जो समृ द्ध के साथ समर्थन कर सकता है।समर्पण और साहित्य के माध्यम से राजनीतिक प्रशासन को और भी सामर्थ्यपूर्ण बनाने का यह संयोजना व्यक्तिगत और सामाजिक स्तरों पर सम्प्रेरिति प्रदान कर सकता है। यह समृ द्ध , सामाजिक न्याय, और सामाजिक समरसता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।इसके रूप में , संस्कृति और साहित्य राजनीतिक प्रशासन के लए महत्वपूर्ण और उपयोगी साधन हो सकते हैं , जो समृ द्ध और सामाजिक परिपर्णता की दिशा में मदद कर सकते हैं।

<u>मुगल काल के दौरान साहित्य वकास:</u>

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मुग़ल साम्राज्य के काल में साहित्य और कला का वकास एक महत्वपूर्ण चरण था जो भारतीय साहित्य और संस्कृति के इतिहास में महत्वपूर्ण है। मुग़ल साम्राज्य के समय के साहित्य का वकास व भन्न शैलीयों में हुआ और यह एक समृ द्ध और समसामयिकता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कया।मुग़ल समय में उर्दू साहित्य का प्रमुख वकास हुआ। यह वक्त था जब उर्दू भाषा और साहित्य का संबोधन कया गया और इसने एक अलग पहचान प्राप्त की। मुग़ल शासकों ने उर्दू को प्रोत्साहित कया और इसका साहित्यिक वकास कया। मर्ज़ा ग़ा लब , मीर ता क़ मीर, और फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ जैसे महान शायर इस काल में प्र सद्ध हुए।मुग़ल काल में संस्कृत साहित्य और कला का वकास भी हुआ। अकबर नामक मुग़ल सम्राट ने अकबरनामा के रूप में एक महत्वपूर्ण संस्कृत कृति को समर्थन दिया , जिसमें संस्कृत साहित्य और कला के वकास में मदद मली।मुग़ल काल में नृत्य और संगीत का भी वकास हुआ। मुग़ल सम्राटों के दरबारों में कला के प्रति गहरा रुझान था और कई महत्वपूर्ण संगीतकार और नृत्यकार इस काल में प्र सद्ध हुए।

इस प्रकार, मुग़ल साम्राज्य के काल में साहित्य , संस्कृति, और कला का वकास हुआ और यह भारतीय साहित्य और संस्कृति के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान कया। इसने भारतीय समृ द्ध और व वधता की दिशा में एक महत्वपूर्ण भू मका निभाई।

निष्कर्ष

मुग़ल काल में साहित्य का वकास एक महत्वपूर्ण और समृद्ध क्रांति था जो भारतीय साहित्य को एक नए आयाम के माध्यम से प्रस्तुत कया। इस काल के दौरान , साहित्यिक उत्कृष्टता की प्राप्ति हुई और भाषा, कला, और धर्म से जुड़े व भन्न पहलुओं में वकास हुआ।मुग़ल साम्राज्य के शासकों ने साहित्य और कला के प्रति गहरा रुझान दिखाया , जिसका परिणामस्वरूप साहित्यकारों को उनके काम के लए सराहना मली। उर्दू भाषा की प्रमुखता इस काल में बढ़ी , जिससे व भन्न भाषाओं के लोगों के बीच साहित्यिक वचारों का आदान-प्रदान हो सका।क वता , काव्य, और नाटक में वकास हुआ, और अकबरी और ब्रज क वता के माध्यम से उच्च स्तर के काव्य रचनाएँ हुईं। मीर ताक़ी मीर जैसे महान क व ने अपनी रचनाओं में प्रेम , जीवन, और धर्म के महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रस्तुत कया।धा र्मक साहित्य में भी वकास हुआ , और गुरु नानक और तुलसीदास जैसे महान क वयों ने अपनी रचनाओं से धा र्मक तत्वों को प्रस्तुत कया।समग्र रूप से , मुग़ल

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

काल में साहित्य के वकास ने भारतीय साहित्य को एक नयी दिशा देने के रूप में महत्वपूर्ण योगदान कया और इसे भारतीय साहित्य के इतिहास में एक उच्च स्थान पर स्था पत कया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संदर्भ

अरे पैगम्बर! इंडो-फ़ारसी साहित्य का इतिहास, पब। 2001, पी. 252.

शर्मा, एस. (2017)। मुग़ल अर्का डया: भारतीय दरबार में फ़ारसी साहित्य। हार्वर्ड यूनिव र्सटी प्रेस।

रिचर्ड्स, जे.एफ. (1993)। मुग़ल साम्राज्य (खंड 5)। कैम्ब्रिज यूनिव र्सटी प्रेस.

खान, आई. ए. (2001)। मुगल भारत में राज्य: एक प्रति-दृष्टि के मथकों की पुनः जांच। सामाजिक वैज्ञानिक, 16-45.

शमेल, ए. (2004). महान मुगलों का साम्राज्य: इतिहास, कला और संस्कृति। प्रति क्रया पुस्तकें।

आलम, एम. (1998)। फ़ारसी की खोज: मुग़ल राजनीति में भाषा। आधुनिक ए शयाई अध्ययन , 32(2), 317-349।

बुश, ए. (2011)। राजाओं की क वता: मुगल भारत का शास्त्रीय हिंदी साहित्य। ऑक्सफोर्ड यूनिव र्सटी प्रेस।

सद्दीकी, आई.एच. (1986)। मुगल-पूर्व काल में भारत में जल कार्य एवं संचाई व्यवस्था। जर्नल ऑफ़ द इकोनॉ मक एंड सोशल हिस्ट्री ऑफ़ द ओरिएंट/जर्नल डे ल 'हिस्टोयर इकोनो मक एट सोशल डे ल'ओरिएंट, 52-77।

ददलानी, सी.बी. (2018)। पत्थर से कागज तक: स्वर्गीय मुगल साम्राज्य में इतिहास के रूप में वास्तुकला। येल यूनिव र्सटी प्रेस।

एडवर्डस, एस.एम., और गैरेट, एच.एल.ओ. (1995)। भारत में मुगल शासन. अटलांटिक प्रकाशक और जिला।